Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July 2024 5(7), 957–961

GOSWAMI TULSIDAS JI'S ETERNAL WORK RAMCHARITMANAS: SCIENTIFIC DEPICTION

गोस्वामी तुलसीदास जी की कालजयी रचना रामचरितमानस: वैज्ञानिक चित्रण

Om Mishra [1]

[1] Former Head of Department Hindi Journalism Department, Bhim Rao Ambedkar College Delhi University, Delhi, Yamuna Vihar Delhi-94

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i7.2024.4744

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: Ramcharitmanas is a great book which is considered to be the best epic of the world. Goswami Tulsidas ji has presented the ideal character of Ram in this epic. The story of this epic is full of historicity. In the Bhakti period of Hindi literature, the Tulsi era can be considered to be from 1532-1623 AD. Humayun (1530-1538, Cultural Dimensions of Tulsi Literature, page number 76-77) lived in this era. It was prevalent during the reign of Sher Shah (1530-1555) and Jahangir (1605-1628).1 Along with this, this book also describes religion, ethics, philosophy and science. Goswami Tulsidas ji, while describing historical events in Ramcharitmanas, made this book of high class by describing the devotion of Ram. In such a situation, this book proves to be of very high class. In this book, views have been expressed on the contemporary form of science. Goswami Tulsidas ji has considered the origin of science from renunciation. Without science, the feeling of equality cannot be achieved in life.

Hindi: रामचरितमानस एक महान ग्रंथ है जिसे विश्व का श्रेष्ठ महाकाव्य माना जाता है गोस्वामी तुलसीदास जी न इस महाकाव्य में राम के आदर्श चरित्र को प्रस्तुत किया है। इस महाकाव्य की कथावस्तु ऐतिहासिकता से पूर्ण है। हिंदी साहित्य के भक्ति काल में तुलसी युग सन् 1532-1623 ई0 तक माना जा सकता है। इस युग में हुमायूं (1530-1538, तुलसी साहित्य के सांस्कृतिक आयाम पृष्ठ संख्या 76-77)। शेरशाह (1530-1555) ई0 और जहांगीर (1605-1628) ई0 के राज्यकाल में व्याप्त था।1 इसके साथ साथ इस ग्रंथ में धर्म, नीति, दर्शन तथा विज्ञान का वर्णन भी है गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में ऐतिहासिक घटनाओ का निरूपण करते हुए इस ग्रंथ को राम की भक्ति के वर्णन से उच्च कोटि का बना दिया। ऐसी स्थिति मे यह ग्रंथ अत्यंत उच्च कोटि का सिद्ध होता हैं इस ग्रंथ में विज्ञान के तत्कालिक स्वरूप पर विचार व्यक्त किया गया है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने बैराग्य से विज्ञान की उत्पत्ति मानी है।

1. प्रस्तावना

रामचरितमानस एक महान ग्रंथ है जिसे विश्व का श्रेष्ठ महाकाव्य माना जाता है गोस्वामी तुलसीदास जी न इस महाकाव्य में राम के आदर्श चरित्र को प्रस्तुत किया है। इस महाकाव्य की कथावस्तु ऐतिहासिकता से पूर्ण है। हिंदी साहित्य के भक्ति काल में तुलसी युग सन् 1532-1623 ई0 तक माना जा सकता है। इस युग में हुमायूं (1530-1538, तुलसी साहित्य के सांस्कृतिक आयाम पृष्ठ संख्या 76-77)। शेरशाह (1530-1555) ई0 और जहांगीर (1605-1628) ई0 के राज्यकाल में व्याप्त था।1 इसके साथ साथ इस ग्रंथ में धर्म, नीति, दर्शन तथा विज्ञान का वर्णन भी है गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में ऐतिहासिक घटनाओ का निरूपण करते हुए इस ग्रंथ को राम की भक्ति के वर्णन से उच्च कोटि का बना दिया। ऐसी स्थिति मे यह ग्रंथ अत्यंत उच्च कोटि का सिद्ध होता हैं इस ग्रंथ में विज्ञान के तत्कालिक स्वरूप पर विचार व्यक्त किया गया है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने बैराग्य से विज्ञान की उत्पत्ति मानी है। विज्ञान के बिना जीवन में समता का भाव प्राप्त नहीं हो सकता। उन्होंने विज्ञान को ज्ञान से पृथक बताते हुए उच्च कोटि का तथा सुव्यवस्थित ज्ञान बताया है:-

‘अरथ धरम कामादिक चारी। कहब ग्यान बिग्यान बिचारी।।’

‘ब्रह्मचर्जब्रत संजम नाना। धीरज धरम ग्यान बिग्याना।।’2

जिस प्रकार इस युग में अनेक प्रोफेसर तथा इमीनेंट प्रोफेसर आदि है उसी प्रकार उस युग में भी विज्ञान के ज्ञाता ऋषि मुनि थे और विज्ञान के ज्ञाने के लिए गुरू के सानिध्य में छात्र विज्ञान का ज्ञान प्राप्त करता था:-

'बिनु गुरू होइ कि ग्यान कि होइ बिरागु बिनु।'

'बिनु बिग्यान कि समता आवइ।'3

गोस्वामी तुलसीदासजी ने रामचरितमानस में विज्ञान के ज्ञाता ऋषियों मुनियो को आज के वैज्ञानिको, सीनियर वैज्ञानिकों, इमीनेंट वैज्ञानिकों के समान ही प्रस्तुत किया है उन्होंने कुछ ऋषि मुनियों को उच्च कोटि का तथा कुछ को मध्यम कोटि का निरूपित किया है उन्होंने सक सनकादि, नारद, भारद्वाज, विश्वामित्र, वशिष्ठ, श्रृंगी, अगस्त्य आदि ऋषियों को तथा हनुमान और विभीषण,श्रीराम को भी विज्ञान को ज्ञाता के रूप में प्रस्तुत किया है। ये सभी इस प्रकार की वैज्ञानिक क्रियाओ को जानते थे जैसे अदृश्य हो जाना एक स्थल से दूसरे स्थल पर शीघ्र पहुंच जाना, आकाश मार्ग में विचरण करना आदि जो सभी आधुनिक विज्ञान की खोजो के समान ही प्रतीत हो रही है। वे सब परमतत्व के साथ-साथ भौतिक तत्वों का भी ज्ञान रखते थे:-

सुनसनकादि भगत मुनि नारद। जे मुनिबर बिग्यान बिसारद।।4

इसके अलावा गोस्वामी जी ने श्रीराम को भी एक वैज्ञानिक के रूप मे प्रस्तुत किया है:-

'पुनि सादर बोले मुनि नारद। सुनहु राम बिग्यान बिसारद।।'

'सोई सच्चिदानंद घन रामा। अज बिग्यान रूप बल धामा।।'5

इसके अतिरिक्त गोस्वामी तुलसीदास जी ने महा़ऋषि वशिष्ठ, श्रृंगी, विश्वामित्र और अगस्त को विज्ञानी बताया:-

'नाम विभीषनु जेहि जग जाना। विष्नुभगत बिग्यान निधाना।।'

'पवन तनय बल पवन समाना। बुधि विवके विज्ञान निधाना।।'6

गोस्वामी तुलसीदास जी के द्ारा प्रस्तुत आदर्श चरित्र राम वैज्ञानिको को ज्ञानियों से ज्यादा सम्मान देते थे:-

'ग्यानिहु ते अति प्रिय बिग्यानी।'7

गोस्वामी तुलसीदास अपने आदर्श राम को सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक मानते हुए लिखते है:-

सोई सर्वग्य तग्य सोइ पंडित। सोइ गुन गृह बिग्यान अखंडित।।

गोस्वामी तुलसीदास जी का मानना है कि बिना विज्ञान के ज्ञान के कोई भी प्राणी संसार में समता की भावना अनुभव नहीं कर सकता:-

बिनु बिज्ञान कि समता आवइ।8

इस प्रकार निश्चय ही गोस्वामी तुलसीदास जी आधुनिक विज्ञान शब्द की व्याख्या करते प्रतीत होते है तथा रामचरितमानस में विज्ञान और विज्ञानी शब्द, आधुनिक विज्ञान और वैज्ञानिक के पर्याय के रूप में प्रयुक्त हुए है उनका विज्ञान शब्द इस अर्थ को पुष्ट करता है कि जो परम तत्व तथा भौतिक तत्वों दोनों का ज्ञाता है वही वैज्ञानिक है। इसी कारण उन्होंने अपने आदर्श भगवान श्रीराम को सबसे बड़ा वैज्ञानिक माना तथा उन्हें एक नितांत आध्यात्मिक शक्ति के रूप में चित्रित करने के साथ-साथ, उन्हें परम तत्व के परम ज्ञाता के रूप में भी प्रस्तुत किया है उन्होंने विज्ञान की खोज और अविष्कारों का मूल तप बताया है जिससे वैज्ञानिक, अन्य चीजों से ध्यान हटाकर अपनी खोज को लक्ष्य मे रखता है:-

तप बल बिप्र सदा बरियारा।

तप बल रचै प्रपंच बिधाता। तप बल विष्णु सदा जग़त्राता।

तप बल संकर करहिं संघारा। तप बल सेस धरहिं सिरभारा।।9

रामचरितमानस में अनेक पात्र वैज्ञानिक शक्तियों से संपन्न थे और उन्हें विज्ञान की सकारात्मक और नकारात्मक दोनों शक्तियों का ज्ञान था। रामचरितमानस के पात्र रावण, कुम्भकरण, विभीषण और मेघनाथ को दिव्य वैज्ञानिक शक्तियां प्राप्त थी। परंतु वे उनका सकारात्मक कम नकारत्मक ज्यादा उपयोग करते थे।

इस ग्रंथ में अनेक प्रकार रिसर्च सेंटरों के बारे में भी वर्णन मिल जाता है। ये रिसर्च सेंटर अधिकांशतया प्रकृति के रम्य वातावरण में स्थित होते थे इनमें ऋषि मुनि और तपस्वी लोग शोध करते थे। रामचरितमानस के प्रमुख रिसर्च सेंटर के अध्यक्ष के रूप में महाऋषि वशिष्ठ और विश्वामित्र का चित्रण किया गया है। भारद्वाज, अगस्त्य, श्रृंगी, परशुराम ऋषि भी अपने-अपने आश्रम मे रिसर्च सेंटर के प्रमुख थे। इन रिसर्च केंद्रो में विश्वामित्र आश्रम, अगस्त्य आश्रम तथा भारद्धाज आश्रम, श्रृंग त्रषि का आश्रम तथा महाऋषि परशुराम को आश्रम प्रमुख है इन रिसर्च सेंटरो की कार्यप्रणाली तत्कलीन वैज्ञानिक प्रगति को प्रस्तुत करती है। तत्कालीन विज्ञान का प्रयोग ऋषि मुनि दूसरो की भलाई के लिए करते थे जबकि दैत्य भी विज्ञान के ज्ञाता थे और वे विज्ञान का प्रयोग दूसरो को हानि पहुंचाने के लिए करते थे और उनके ये वैज्ञानिक उपकरण बहुत कम पर्यावरण प्रदूषण करते थे। उस समय के वैज्ञानिक उपकरण इस प्रकार के थे कि वे जनहित में ज्यादा प्रयुक्त किये जाते थे। महाऋषि विश्वामित्र ने राम-लक्ष्मण को इस प्रकार के वैज्ञानिक अस्त्र-शस्त्र प्रदान किए थे वे परेशान जनता की रक्षा कर सकें। इन अस्त्रों में बहुत अधिक शक्ति थी ये अस्त्र किसी को मोहित करने, बेहोश करने, किसी को पागल करने, आग लगाने, वर्षा करने तथा तूफान लाने की क्षमता रखते थे। ये अस्त्र वर्तमान रोबर्ट को समान थे जो मानव तथा पशु-पक्षियों की तरह काम करते

थे। रामचरितमानस में इस प्रकार के अनेक अस्त्रों-शस्त्रों का वर्णन किया गया है जैसेः-ब्रम्हास्त्र आदि। ब्रम्हास्त्र एक इस प्रकार का दिव्य अस्त्र है जो राम के द्ारा रावण को मारने के लिए छोड़ा गया। (रामचरितमानस, 6-92-102)

जो रावण के प्राण लेने के बाद पुनः राम के तरकस में वापस आ जाता था जो आज की मिसाइस के समान था जो पृथ्वी से छोड़ी जाकर पुनः पृथ्वी पर वापस आ जाती है। जब लगातार राम रावण के सिर काट रहे थे वे बार-बार जीवित हो जाते थे। इसके लिए राम ने इक्कीस बाणो वाला अमोघ ब्रम्हास्त्र चलाया जिससे रावण की नाभि का अमृत सूखाकर जिसने उसके जीवन का अंत कर दिया।

इसी प्रकार रामचरिनमानस मे धनुषों का भी उल्लेख है जो वैज्ञानिक रूप से अत्यंत शक्तिशाली थे और उन्हें कोई उठा नहीं सकता था। इस धनुष को वहीं उठा व प्रयुक्त कर सकता था जिसे इसकी वैज्ञानिक टेक्नोलॉजी का ज्ञान होता था। जैसे सीता स्वयंवर मे भगवान राम ने भगवान शंकर के धनुष को उठाया और उसकी प्रत्यंचा चढ़ा दी। रामचरित मानस में यह भी वर्णन किया गया है कि महाऋषि अगस्त्य ने भगवान राम को ऐसे अस्त्रों-शस्त्रों की वैज्ञानिक जानकारी भी दी थी और मेघनाथ ने ब्रम्हा द्वारा एक ऐसी वैज्ञानिक ब्रह्मशक्ति को प्राप्त किया था जिससे उसने लक्ष्मण को मूर्छित किया। इसके अलावा रामचरितमानस मै अनेक दिव्यास्त्रों का कई स्थलों पर वर्णन किया गया है।

रामचरितमानस में वैज्ञानिक विमानों तथा रथो का भी वर्णन है। इस प्रकार का एक विमान कुबेर के पास था जिसे पुष्पक विमान के नाम से जाना जाता था। इस विमान को ब्रम्हा ने कुबेर को दिया था जो बाद मै उसके भाई रावण ने उससे छीन लिया था। रावण को मारने के बाद श्रीराम इसी विमान से अयोध्या वापस आये थे और पुनः यह विमान उन्होंनें कुबेर को दे दिया था। यह विमान बिना पायलेट के चलने वाला आधुनिक विमानों के समान ही था। (रामचरितमानस 6/124)

रामचरितमानस में इस प्रकार के रथों का भी वर्णन है जो बहुत सुंदर और वैज्ञानिक शक्तियों से पूर्ण होते थे। इसी प्रकार को एक रथ जो इंद्र का था और इंद्र ने यह रथ राम को रावण से युद्ध करने के लिए दिया था यथा:-

सुरूपति निज रथ तुरत पठावा। हरष सहित मातलि लै आवा।।

तेज पुंज रथ दिव्य अनूपा। हरषि चढ़े कौशलपुर भूपा।।

रामचरितमानस 6/88/2/3

इसी प्रकार अन्य रथांे का वर्णन भी रामचरितमानस मानस में किया गया है जिन्हे आवश्यकता पड़ने पर आकाश में उड़ाया जा सकता था और जमीन पर भी चलाया जा सकता था।

रामचरितमानस में भवन, पुल, इमारतो के निर्माण की वैज्ञानिकी का वर्णन भी मिल जाता है। जब श्रीराम ने समुद्र के ऊपर सेतु बांधने का काम शुरू किया था यह कंस्ट्रक्शन सांइस की मदद से हुआ प्रतीत होता है उनकी सेना मे इस प्रकार के दो इंजीनियर थे उन्हें इस प्रकार की वैज्ञानिक जानकारी थी जो किसी बड़े से बड़े पत्थर को छू लेते थे तो वह पानी पर तैरने लगता था।:-

नाथ नील नल कपि द्वौ भाई। लरकाईं रिषि आसिष पाई।।

तिन्ह के परस किएँ गिरि भारे। तरि हहिं जलधि प्रताप तुम्हारे।।

मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई। करिहउँ बल अनुमान सहाई।।

एहि बिधि नाथ पयाधि बँधाइस। जेहिं यह सुजसु लोक तिहुँ गाइअ।।

रामचरितमानस 5/59/1-4

रामचरितमानस मे इसी प्रकार की मिसाइलों प्रक्षेपण अस्त्रों, बारूदी सुरंगो, अग्नि प्रज्जवलन, विस्फोट आदि वैज्ञानिक गतिविधयों का भी वर्णन किया गया है इसी प्रकार के एक प्रसंग में लक्ष्मण अपनी भाभी सीता को छोड़कर जब मारीच पीछा करने गये राम को ढूढ़ने जाते है तो वह इस प्रकार की वैज्ञानिक रेखा, सीता जिस कुटिया में निवास करती थी उस कुटिया के चारो ओर खींच देते है जिसको लांघने पर रेखा से अग्नि प्रज्जवलित हो पड़ती थी जो आजकल के बारूदी सुरूमों के समान प्रतीत होती है।

रामानुज लघु रेख खचाइर्, सोउ नहिं नाघेउ असि मनुसाई।। 10

रामचरितमानस में इनफार्मेशन, कम्यूनिकेशन टेक्नोलॉजी का भी चित्रण हुआ है। जैसे आकाश में नभवाणी का होना। इस ग्रन्थ में आकाशवाणी और दूरदर्शन से संबधित विज्ञान का भी वर्णन किया गया है। इसी प्रकार कई स्थलों पर दूरदर्शन से संबधित घटनाओं का वर्णन यहां मिल जाता है। जब भगवान शंकर की पत्नी सती ने भगवान शंकर से झूठ बोला था तो भगवान शंकर ने उनकी गतिविधियों को दूरदर्शन के द्वारा पता कर लिया था। एक अन्य प्रकरण मे संपाती नामक पक्षी के द्वार अशोक वाटिका में बैठी हुई सीता को देख लेना मेडिकल सांइस की खोज प्रतीत होती है जिससे स्पष्ट है गीध को अन्य पक्षियों से अधिक दूर का दिखाई देता है या फिर दूरदर्शन का ही प्रयोग सिद्ध होता हैः-

गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका। तहँ रहे रावण सहज असंका।।

तहं असोक उपवन जहं रहई। सीता बैठि सोच रत अहई।।

मैं देखउँ तुम्ह नाहीं गीधहि दृष्टि अपार।-रामचरितमानस, 4-27-28

उपरोक्त दूरदर्शन और आकाशवाणी से संबधित वर्णन आजकल की मीडिया विषयक गतिविधियों के समान प्रतीत होते है।

रामचरितमानस में कैमिस्ट्री का भी वर्णन है उस समय अमृत नामक रसायन की जानकारी सभी को थी जिसको पीने से मृत्यु नहीं होती और वृद्वावस्था नहीं आती। जिसके द्वारा इंद्र ने राम की कहने पर युद्व मे मारे गये वानरों को पुनः जीवित किया था।

सुधा बरसि कपि भालु जिआए। हरिष उठे सब प्रभु पहिं आए।।

रामचरितमानस 6/113/5

रामचरितमानस में पशु पक्षियों संरक्षण का भी वर्णन है क्योंकि इन पशु-पक्षियों से विशेष प्रकार रसायनों की प्राप्ति हो जाती थी जैसे गाय से घी दूध आदि। बिप्र धेनु सुर संत हित नामक चैपाई में भगवान विष्णु ने गाय को संरक्षण प्रदान करने के लिए अपने रामावतार का एक मूल कारण बताया क्योकि गाय का दूध और धी अत्यंत पौष्टिक रसायन के रूप में विख्यात था। इसके अलावा रामचरितमानस मानस में इस प्रकार के निर्मल जल का वर्णन है जिसके पीने से सभी स्वस्थ्य रहते थेः-

गंग सकल मुद मंगल मूला। सब सुख करनि हरनि सब सूला।

मंजन कीन्ह पंथ श्रम गयऊ। सुचि जल पिअत मुदित मन भयऊ।। 11

रामचरितमानस में एक इस प्रकार के रसायन का भी वर्णन है जिसे लगाने से दिव्य ज्योति प्रदान हो जाती थी।

यथा सुअंजन औजि दृग साधक सिद्व सुजान।

कौतुक देखहिं सैलमृग भूतल भूरि निधान।।   12

रामचरितमानस में इस प्रकार के वस्त्रो का भी उल्लेख किया गया है जिनमे एक विशेष प्रकार के रसायन लगाए जाते थें। जिनको लगाने से वस्त्रे हमेशा नए बने रहते थेः-

दिव्य बसन भूषन पहिराए। जे नित नूतन अमल सुहाए।।

-रामचरितमानस, 3/4 (3)

एक अन्य रसायन जो मृतक शरीर कई वर्षा तक सुरक्षित रखने में सहायक है का भी चित्रण है। इसके अलावा वृक्षो से निकलने वाले रसायनिक रस का प्रयोग भी रामचरितमानस मे वर्णित है। श्रीराम ने अपने बालो में बरगद के रस का प्रयोग किया थाः-

'सकल सौच करि राम नहावा। सुचि सुजान बटझीर मगावा।।

अनुज सहित सिर जटा बनाए। 13

इसी प्रकार लंका दहन प्रसंग में हनुमान को एक ऐसे रसायन की जानकारी थी जो शरीर पर लगाने से व्यक्ति आग में नहीं जलता था। तथा सीता को भी इसी प्रकार के रसायन की जानकारी थी जो अग्नि परीक्षा के समय उनके द्वारा प्रयोग मे लाई गयी।

रामचरितमानस मानस में मेडिकल सांइस का भी चित्रण है। लक्ष्मण के प्राणो की रक्षा के लिए संजीवनी दवा का प्रयोग रामचरितमानस में मिल जाता है जिसके द्वारा लक्ष्मण बेहोशी से चेतना मे वापस आ जाते है। और इसके औषधि के जानकार सुषेण बैध भी इस बात के प्रमाण है कि उस समय के डॉक्टर पूर्ण ज्ञाता थे। इस प्रकार की औषधियां हिमालय पर्वत पर पाई जाती थी। गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस मे इस बात का भी वर्णन किया है कि उस समय सल्य चिकित्सक भी अत्यंत निपुण थे जो शल्य क्रिया के द्ारा कई बिमारियों को दूर कर देते थे। इन चिकित्सकों अनेक प्रकार की औषधियों की जानकारी थी। जिनके सेवन से मनुष्य स्वस्थ्य रहता थाः-

सब सुंदर सब बिरूज शरीरा। अल्प मृत्यु नहिं कबनेउ पीरा। 14

रामचरितमानस उत्तरकांड।।

रामचरितमानस के अरण्यकांड में विश्वामित्र, अगस्त्य, भारद्वाज आदि के आश्रमों में अनेक प्रकार के रसायनिक तथा औषधि गुण वाले वृक्ष लगे रहते थे। जिनके प्रयोग से यह ऋषि लोग अनेक प्रकार औषधियों का निर्माण किया करते थे। इसके अलावा इन ऋषियों को इस प्रकार के रसायन की भी जानकारी थी जो लोहे को सोने बदला जा सकता थाः-

पारस परस कुधातु सुहाई।। 15

रामचरितमानस में प्लास्टिक सर्जरी तथा शेप चेंज करने के विज्ञान की जानकारी का भी वर्णन है। इसमें अदृश्य होने की वैज्ञानिक क्रिया के ज्ञान का भी चित्रण किया गया है। इसी क्रिया की सहायता से सूपनखा राम के पास सुन्दर रूप धारण करके पहुंचीः-

रूचिर रूप धरि प्रभु पहिं जाई। बोली बचन बहुत मुसुकाई।। 16

इसी प्रकार मारीच,सीता हरण प्रसंग मे भी गोस्वामी जी ने रूप पारिवर्तन विज्ञान का वर्णन किया हैः-

तेहिं बन निकट दसानन गयउ। तब मारीच कपट मृग भयउ।।

अति विचित्र कछु बरनि न जाई। कनक देह मनि रचित बनाई।।

सीता परम रूचिर मृग देखा। अंग अंग सु मनोहर वेषा।।

सुनहु देव रघुवीर कृपाला। एहिमृग कर अति सुंदर छाला।। 17

इसी प्रकार किष्किंधा कांड मे गोस्वामी तुलसीदास जी ने हनुमान तथा ताड़का नामक पात्रो को भी रूप परिवर्तन विज्ञान के ज्ञाता के रूप में प्रस्तुत किया गया है:-

'बिप्र रूप धरि कपि तहॅ गयऊ।

'मसक समान रूप कपि धरी। लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी।।

'अति लघु रूप धरेउ हनुमाना। पैठा नगर सुमिरि भगवाना।।

'बिप्र रूप धरि बचन सुनाए। सुनत बिभीषन उठितहॅ आए।। 18

इस प्रकार रामचरितमानस में विज्ञान का निरूपण अनेकं स्थलों पर गोस्वामी तुलसीदास जी ने किया है। उस समय की विज्ञान मंत्र शक्ति और आध्यात्मिक शक्ति द्वारा संचालित चित्रित है। इसके साथ-साथ उन्होंने अनेंको दिव्य रसायनों, जीव विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, और भौतिक विज्ञान का भी चित्रण किया है। उन्होंन ऐसे अस्त्रो- शस्त्रों प्रक्षेपास्त्रों, का भी वर्णन किया है जो प्रयोग कर्ता की आज्ञानुसार आगे-पीछे, मध्य में कहीं भी प्रयोग करने के बाद वापस भी आ जाते थे। परंतु वे प्रदूषण नहीं करते थे। राक्षसों को छोड़कर अन्य पात्र उनका प्रयोग समाज की कल्याण के लिए करते थे। उसमे चित्रित ऋषि मुनि लोग उच्च कोटि के वैज्ञानिक थे जो लोक कल्याण के लिए विज्ञान का प्रयोग करते थे। अतः रामचरितमानस में चित्रित विज्ञान कालजयी विज्ञान है।